सरिता भिसे

खानाबदोश चरवाहा के परिवार से, सरिता बकरियां उनके माँ पिता साल दो साल के लिए गाँव से बहार काम पर जाते थे। चरती थी। वह अपनी दादी, चाचा और भाई के साथ सतारा के एक गाँव में रहती थी। १५ साल की उम्र में सरिता ने पुणे के क्रीड़ा प्रबोधिनी, खेल को बढ़ावा देने के लिए एक एक सरकारी कार्यक्रम में दाखला लिया। यहाँ वो दौड़ने की ट्रेनिंग ले रही थी लेकिन केवल तीन महीने बाद, उनकी नियुक्ति हॉकी में गोल कीपिंग के लिए की गयी। सरिता को हॉकी से डर लगता था पर पहली बार खेलने के बाद उन्हें हॉकी में रुची आयी। वह कहती है, “जब मैं बालेवाड़ी आयी, तो मैं खेल को देखकर दंग रह गई। समय पर और अच्छा खाना मेरे लिए एक बोनस था।”

अब तक, सरिता ने महाराष्ट्र की कप्तानी 11 राष्ट्रीय स्तर के मुक़ाबलों में की है। आज, वह महाराष्ट्र की अंडर -16 हॉकी टीम की कप्तानी करती हैं।